भारत सरकार
वित्त मंत्रालय
आर्थिक कार्य विभाग
विदेशी ऋण प्रबंधन एकक

प्रेस विज्ञप्ति

विषय : दिसम्बर,2005 को समाप्त तिमाही के लिए भारत का विदेशी ऋण

दिसम्बर, 2005 के अंत की स्थिति के अनुसार, 119.2 बिलियन अमरीकी डालर के स्तर पर भारत के विदेशी ऋण के भंडार में सितम्बर, 2005 के अंत के 124.2 बिलियन अमरीकी डालर की तुलना में 5.0 बिलियन अमरीकी डालर की गिरावट देखी गई (सारणी)। दिसम्बर, 2005 के अंत में बकाया विदेशी ऋण में आया यह संकुचन मुख्यतया विदेशी वाणिज्यिक उधारों में आई गिरावट के कारण था जो दिसम्बर, 2005 में 5.5 बिलियन अमरीकी डालर के इंडिया मिलेनियम डिपाज़िट (आईएमडी) के मोचन की प्रतिबिम्बित करता है।

सारणी : भारत का विदेशी ऋण

(मिलियन अमरीकी डालर)

मद	बकाया ऋण			घट-बढ़			
				कुल		प्रतिशत	
	मार्च, 2005 सं.	सितम्बर, 2005 सं.	दिसम्बर, 2005 त्व.अ.	मार्च, 2005 से दिसम्बर, 2005 (4-2)	सितम्बर, 2005 से दिसम्बर, 2005 (4-3)	मार्च, 2005 से दिसम्बर, 2005	सितम्बर, 2005 से दिसम्बर, 2005
1	2	3	4	5	6	7	8
1. बहुपक्षीय	31,702	31,429	31,799	97	370	0.3	1.2
2. द्विपक्षीय	16,930	15,875	15,553	-1,377	-322	-8.1	-2.0
3. आईएमएफ	0	0	0	0	0	0.0	0.0
4. निर्यात ऋण	4,980	5,150	5,168	188	18	3.8	0.3
5. वाणिज्यिक उधार	27,024	28,319	22,433	-4,591	-5,886	-17.0	-20.8
6. अनिवासी भारतीय जमाराशियां (दीर्घावधिक)	32,743	32,861	33,239	496	378	1.5	1.2
7. रूपया ऋण	2,301	2,120	2,069	-232	-51	-10.1	-2.4
8. दीर्घावधिक ऋण (1 से 7)	115,680	115,754	110,261	-5,419	-5,493	-4.7	-4.7
9. अल्पावधिक ऋण	7,524	8,398	8,931	1,407	533	18.7	6.3
10. कुल ऋण (8+9)	**123,204**	**124,152**	**119,192**	**-4,012**	**-4,960**	**-3.3**	**-4.0**

सं = संशोधित   त्व.अ. = त्वरित अनुमान

दिसम्बर, 2005 के अंत में 110.3 बिलियन अमरीकी डालर के स्तर पर बकाया दीर्घावधिक ऋण में, तिमाही के दौरान घटक-वार, 5.49 बिलियन अमरीकी डालर की गिरावट देखी गई जो आईएमडी की वापसी-अदायगी को ही मुख्यतया प्रतिबिम्बित करने वाले वाणिज्यिक उधारों के अपेक्षाकृत कम भंडारों के कारण था। इसी तिमाही में अल्पावधिक ऋण में 6.3 प्रतिशत की वृद्धि हुई जो व्यापार क्रेडिटों में वृद्धि होने के कारण 8,931 मिलियन अमरीकी डालर के स्तर पर जा पहुंचा। व्यापार क्रेडिटों में हुई वृद्धि का कारण चालू राजकोषीय वर्ष में अब तक आयातों में अधिक बढ़ोत्तरी होना रहा है।

कुल ऋण-भंडार में अनिवासी जमाराशियों के हिस्से का जहां तक संबंध है, दिसम्बर, 2005 के अंत तक कुल ऋण में उनका हिस्सा 27.9 प्रतिशत था। बहुपक्षीय ऋण का हिस्सा 26.7 प्रतिशत था जिसके बाद 18.8 प्रतिशत हिस्से के साथ वाणिज्यिक उधारों का स्थान था। द्विपक्षीय ऋण का हिस्सा 13.0 प्रतिशत था। निर्यात क्रेडिट और रूपया ऋण का हिस्सा क्रमशः 4.3 प्रतिशत और 1.7 प्रतिशत था। अल्पावधिक ऋण का हिस्सा 7.5 प्रतिशत था।

भारत का विदेशी मुद्रा भंडार जिनमें भारतीय रिज़र्व बैंक की विदेशी मुद्रा परिसंपत्तियां, स्वर्ण, विशेष आहरण अधिकार तथा अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष में रिज़र्व ट्रांश स्थिति शामिल है, दिसम्बर, 2005 के अंत में 137.2 बिलियन अमरीकी डालर था। 31 दिसम्बर, 2005 की स्थिति के अनुसार भारतीय रिज़र्व बैंक की विदेशी मुद्रा परिसंपत्तियां 131.0 बिलियन अमरीकी डालर के स्तर पर थीं जिसने कुल विदेशी ऋण भंडार को लगभग 110 प्रतिशत तक सुरक्षा प्रदान की।

अमरीकी डालर भारत के विदेशी ऋण पोर्टफोलियो में अभी तक मूल्य-निर्धारण की मुख्य मुद्रा बना हुआ है। लेकिन, देश के ऋण-भंडार में अमरीकी डालर का हिस्सा मार्च, 2002 के अंत में 54.3 प्रतिशत से कम होकर दिसम्बर, 2005 के अंत में 44.6 प्रतिशत के स्तर पर आ गया।

सरकार की विदेशी ऋण प्रबंधन नीति सावधानी बरतने की नीति रही है जिसमें सबसे कम महंगे स्रोतों से अधिमानतः लम्बी परिपक्वता अवधि वाले ऋण जुटाने पर, निर्यातों की वृद्धि में तेज़ी लाने, अल्पावधिक ऋण को मॉनीटर करने, वाणिज्यिक उधार को नियंत्रणीय सीमाओं में रखने और ऋण सृजित न करने वाले पूंजी-प्रवाहों को प्रोत्साहित करने पर ध्यान दिया जाता है।

इस रिपोर्ट का संपूर्ण पाठ वित्त मंत्रालय की वेबसाइट पर उपलब्ध है :
http://www.finmin.nic/in

एफ सं0 1(10)/2006-ईडीएमयू
नई दिल्ली, 31 मार्च, 2006